आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:08-09-14

हमें सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर प्रकृतिजीत बनाने वाले, ज्ञान सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे - जब तुम नम्बरवार सतोप्रधान बनेंगे तब यह नैचुरल कैलेमिटीज वा विनाश का फोर्स बढ़ेगा और यह पुरानी दुनिया समाप्त होगी.

आज भी बहुत सारे ब्राह्मण कहते है - बाबा तो बहुत सालो से कह रहे हैं की यह पुरानी दुनिया विनाश होनी है, लेकिन कुछ भी होता नहीं. आज बाबा ने मुरली में उसका राज बताते हुए कहा, इस पुरानी दुनिया का विनाश भी तब होगा जब हम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सतोप्रधान बन जायेंगे यानी इस पुरानी दुनिया का विनाश, हम ब्राह्मण आत्माओं के सतोप्रधान बनने पर निर्भर है. कैसे?

इस सारा सृष्टि चक्र, पुरुष (आत्मा) और प्रकृति का एक खेल है. इस खेल में प्रकृति हमेशा पुरुष (आत्मा) को फोलो करती है, यह एक क़ुदरती नियम हैं. अगर हम सृष्टि चक्र को देखे तो इस में आधा कल्प, यानी सतयुग और त्रेतायुग, हम आत्माये सतोप्रधान से सतो में रहकर पार्ट बजाते है तो उस समय प्रकृति भी मनुष्य आत्माओं को सुख देती है. जब द्वापर से देवी-देवताओं की आत्माये वाम मार्ग में जाती है यानी विकारी बनती जाति है तब से प्रकृति भी धीरे-धीरे रजो से तमोगुणी बनती जाती है और छोटी-बड़ी हल-चल शुरू कर प्राकृतिक आपदाये करती हैं, जो मनुष्यों को दुख पहुँचाती है. अब कलियुग के अन्त में हम देख रहे है की आत्माये जब संपूर्ण तमोप्रधान बन जाती है तो प्राकृतिक आपदाये और ही बढ़ गई है.

हमारा यह शरीर भी प्रकृति के पांच तत्वों का बना हुआ है. हम आत्माये रथी हैं इस शरीर को चलाने की. जैसे हमारी आत्मा अभी पुरुषार्थ कर रही है सतोप्रधान-संपूर्ण पवित्र बनने की, उतना हमारा तमोप्रधान शरीर हम से अलग होता जाता है. हम धीरे-धीरे फील करते है कि हम आत्माये अलग है, और यह शरीर अलग है. अभी शरीर को छोटी-बड़ी बीमारी होती हैं तो उसकी असर आत्मा को नहीं होती यानी आत्मा शरीर के सुख से सुखी और शरीर के दुख से दुखी नहीं होती. शरीर को कुछ भी हो जाये पर आत्मा सदा शांत और सुखी रहती हैं. यही प्रकृतिजीत आत्मा की निशानी हैं.

ॐ शांति.